

# Vasishta Chronicle

A Weekly Newsletter



Edition-2

24.02.2025

Echoing Excellence, One Edition at a Time

Monday

## सवाल सबके मन के - जबाब राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शिक्षाविद डॉ. ए. के. गौर सर के

प्रश्नकर्ता भरत पवार के साथ बातचीत के कुछ अंश

**प्रश्न 1. सर इस तेजी से बदलते समय में भारत की बदलती शिक्षा प्रणाली को आप कैसे देखते हैं?**

उत्तर - पहले शिक्षा सिर्फ क्लासरूम या कक्षाओं तक ही सीमित थी, पर आज शिक्षा पद्धति में आधुनिक तकनीकी का समावेश करके शिक्षा को काफी रूचिकर व प्रभावशाली बनाया गया है जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो रहा है। हमारे विद्यालय में दोनों ही तरह से प्रशिक्षण दिया जाता है।

हमारा प्रयास आनंद पूर्वक, अनुभवात्मक तथा सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा प्रदान करना है।

**प्रश्न 2. आज कक्षा 10 के बाद विषय चयन को लेकर छात्रों व अभिभावकों में काफी दुविधा रहती है इस दुविधा को आप कैसे दूर करते हैं?**

उत्तर - कक्षा दस तक तो सभी विषय अनिवार्य होते हैं। यही वह समय है, जब विद्यार्थी अभिभावक अगली कक्षा हेतु विषय चयन को लेकर दुविधा महसूस करते हैं किन्तु यह बच्चे तथा प्रत्येक अभिभावक पर निर्भर करता है कि वह डॉक्टर बनना चाहता है कि इंजीनियर बनना चाहता है। मेरा सुझाव है कि बच्चे से पूछा जाना चाहिए कि उसका रुझान किस विषय की ओर अधिक है। उसपर विषय थोपा नहीं जाना चाहिए।



**Click here**



To see the complete Podcast click on the above link.

इसलिए सर्वप्रथम छात्र व अभिभावकों को (छात्र का) लक्ष्य (करियर-गोल) निर्धारित करना होगा।

हम विद्यालय में विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन करके छात्रों अभिभावकों को मेडिकल इंजीनियरिंग के अतिरिक्त अन्य शाखाओं के बारे में भी जानकारी प्रदान करते हैं हम साइंस, कॉमर्स व ह्यूमैनिटिज के विभिन्न आयामों की जानकारी समयानुसार देते रहते हैं। जिससे बच्चे करियर को लेकर सही फैसले कर सकें।

### प्रश्न 3. आज के प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में आप वशिष्ठ विद्यालय में बच्चों को कैसे तैयार करते हैं कि वो अपनी पढ़ाई पर अधिक फोकस कर सकें?

उत्तर - हम एक सीधी रेखा पर चलते हुए लक्ष्य निर्धारण की सलाह देते हैं। सर्वप्रथम विद्यार्थी को अपना क्षेत्र निर्धारित करना होता है। यदि विद्यार्थी प्रशासनिक सेवाओं को चुनता है तो वह कला, वाणिज्य या कुछ भी ले सकता है। यदि वह मेडिकल या इंजीनियरिंग की पढ़ाई विदेश में करना चाहता है तो उसे NEET, JEE की तैयारी की कोई आवश्यकता नहीं है।

हमारा उद्देश्य होता है कि लक्ष्य निर्धारण करें व उसी पर चलें, इसके लिए विद्यालय में हम विभिन्न चरणों में करियर काउंसलिंग करते हैं, हमारे विद्यालय में विभिन्न विश्वविद्यालयों की प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है जहाँ माता-पिता व बच्चे देखते व समझते हैं कि कितने विषय है कितने नए विकल्प है। कक्षा दसवीं में हम बच्चों व अभिभावकों को प्रेरित करते हैं कि जिस फील्ड में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं उसी से संबंधित विषय का चुनाव करें।

हम अलग - अलग University से बाहर से रिसोर्स पर्सन को बुलाते हैं जिससे विश्वविद्यालय में प्रवेश की प्रक्रिया का ज्ञान बच्चे प्राप्त करते हैं। हम पढ़ाई को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखते हैं और उनके लक्ष्य के अनुसार भारतीय विश्वविद्यालयों व अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों की जानकारी देते हैं।

### प्रश्न 4. आजकल विद्यार्थियों में डिप्रेशन व आत्महत्या की घटनाएँ बढ़ती जा रही है। ऐसा क्यों?

उत्तर - सुसाइड करने का मुख्य कारण तनाव है और तनाव के मुख्य कारण हैं- बच्चों का काल्पनिक दुनिया में रहना - मैं सब कुछ कर सकता हूँ जैसी सोच रखना; मगर प्रयास कई बार उस स्तर के नहीं होते। आभासीय दुनिया (virtual world) में रहना बच्चों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में अक्षम बना देता है। संयुक्त परिवार का न होना व माता-पिता का बच्चों से अधिक अपेक्षाएं रखना व माता-पिता की व्यस्तता भी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का एक कारण है। कई बार घर में बातचीत का माहौल नहीं होता तथा परिवार के साथ समय न बिता पाने के कारण विचारों का आदान प्रदान नहीं हो पाता।

समस्या का समाधान बड़ों से न मिल पाने के कारण मोबाइल और इंटरनेट का सहारा लेने लगते हैं।

अकेले पढ़ाई करना व अपने संघर्ष को व्यक्त नहीं कर पाना तथा माता-पिता की अपेक्षाओं पर खरा न उतर पाना बच्चों को बहुत दुख पहुँचता है बच्चें या तो डिप्रेशन हो जाते हैं या फिर एक्सट्रीम स्टेप का सोचने लगते हैं।

भरत पवार - डिप्रेशन व आत्महत्या के इतने कारण हो सकते हैं, हम सोच भी नहीं सकते थे । आपकी यह जानकारी अभिभावकों व विद्यार्थियों का मार्ग प्रशस्त करेगी।

धन्यवाद सर

## Quality Over Gimmicks: The Shree Vasishtha Vidhyalaya Way



In a world where marketing gimmicks often overshadow real value, some brands stand apart by letting their quality speak for itself. **Companies like Tesla, Zara, Lamborghini, and Rolls-Royce have built global reputations without relying on flashy advertisements, exaggerated discounts, or empty promises.** Their success is rooted in trust, excellence, and consistent performance—values that resonate deeply with us at Shree Vasishtha Vidhyalaya.

At Shree Vasishtha Vidhyalaya, we do not believe in superficial promotions or inflated claims. Our commitment is to quality education, not propaganda. Many institutions may guarantee success, but **true achievement comes from dedication, effort, and real learning experiences—not just words.** Instead of relying on marketing tricks, we focus on:

✓ **Academic Excellence** – Proven results through research-based learning and innovative pedagogy.

✓ **Holistic Development** – A balance of academics, sports, arts, and life skills.

✓ **Integrity & Transparency** – No misleading claims; just genuine commitment to student growth.

Similarly, **some institutions inflate their fee structures** only to reduce them under the guise of scholarships later

This is just another form of marketing that creates an illusion of exclusivity while offering no real value addition. At Shree Vasishtha Vidhyalaya, **we uphold honesty in our approach, ensuring fair and transparent fee structures without artificial discounts or deceptive tactics.**

Success cannot be bought through clever slogans or false promises. It is earned through consistent effort and the right environment. At Shree Vasishtha Vidhyalaya, we take pride in being a school that delivers on its promises—not one that merely advertises them.

**Because when quality speaks, marketing becomes secondary.**

Mr. Pramod Dhabhai  
Director-Vasishtha Academy



## विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में बाधक बन रहे डमी स्कूल

11 फरवरी, 2025 को एनटीए द्वारा जेईई(मेंस) सत्र-1 का परिणाम घोषित किया गया। परिणाम के साथ ही इस परीक्षा में टॉप करनेवाले एक छात्र की अनोखी उपलब्धि की खबर भी सामने आई। इस छात्र ने जेईई(मेंस) परीक्षा में 100 परसेंटाइल प्राप्त कर सभी का दिल जीत लिया। चारों ओर इस छात्र की वाहवाही होने लगी। पूरा परिवार इस बच्चे की सफलता की खुशियां मना रहा था। बेशक इस बच्चे की सफलता तारीफ़-ए-काबिल है। परंतु परिवार की खुशियां तब आधी हो गई जब शिक्षा जगत में सनसनी फैलाने वाली एक खबर सामने आई। इस खबर ने इस छात्र को सुर्खियों में ला दिया और इसकी कहानी को एक नया मोड़ दिया।

खबर के मुताबिक सीबीएसई ने यह खुलासा किया कि इस छात्र ने जिस विद्यालय में बारहवीं कक्षा में प्रवेश लिया था, सीबीएसई ने डमी एडमिशन दिए जाने के कारण इस विद्यालय की मान्यता पिछले साल ही रद्द कर दी थी। 13 फरवरी, 2025 को सीबीएसई ने एक अधिसूचना जारी कर इस खबर की पुष्टि की है और डमी एडमिशन की चिंताग्रस्त प्रथा पर भी प्रकाश डाला है। अपनी अधिसूचना में सीबीएसई ने यह भी बताया कि जेईई और नीट जैसी परीक्षाओं में सफल होना जरूरी है परंतु इसके चलते शिक्षा की गुणवत्ता और बच्चों के भविष्य के साथ किसी भी तरह का खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिए।

इस घटना से यह पता चलता है कि अभिभावकों को ऐसे डमी स्कूलों के प्रति हमेशा सतर्क रहना चाहिए और अपने बच्चों के भविष्य के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहिए।

अभिभावकों के लिए यह जरूरी है कि वे अपने बच्चों को ऐसे विद्यालय में प्रवेश दिलाए, जो सीबीएसई द्वारा बनाए गए राष्ट्रीय शिक्षा मानकों का पालन कर रहे हैं।

### (CBSE PRESS RELEASE)



केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड  
CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

13.02.2025

PRESS RELEASE

Subject: Role of Regular Schooling in Student Success

New Delhi, February 13, 2025 – A recent report in a leading national newspaper highlighted the success of a student in the JEE (Mains) examination, attributing his achievement to enrolment in a non-attending (dummy) school. While the accomplishment of the student is commendable, it is imperative to address certain misleading implications in the report.

It has been found out that the institution with which the student was enrolled namely SGN Public School, H-243, Kunwar Singh Nagar, Nangloi, Delhi-110041, was disaffiliated by the Board last year. The Board has conducted surprise inspection of the school by a two-member committee and it was established that the school was sponsoring non attending students, besides multiple other violations of Board norms. This raises concerns about the legitimacy of school's academic practices and underscores the need for students to pursue their education through recognized institutions that adhere to national educational standards.

Moreover, the portrayal of non-attending schools as a superior alternative to regular schooling is not in line with the vision of the National Education Policy (NEP) 2020. The policy advocates for a holistic, well-rounded education that fosters critical thinking, conceptual understanding, and real-world problem-solving—elements that are often compromised when students bypass regular schooling for exam-oriented coaching.

Regular schools provide a structured learning environment that nurtures not just academic excellence but also essential life skills, social interaction, and emotional well-being. While coaching institutes may supplement learning, they cannot replace the comprehensive educational experience offered by a full-fledged school system.

Success in competitive exams should not come at the cost of quality education and overall development. It is crucial that students, parents, and educators prioritize institutions that align with national education standards and uphold the true essence of learning beyond.

Secretary, CBSE

अभिभावकों को यह भी समझना चाहिए कि डमी स्कूल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए योग्य विकल्प कभी भी नहीं हो सकते।

उन्हें अपने बच्चों को नियमित स्कूल में ही भेजना चाहिए ताकि उनमें सोचने समझने की क्षमता, व्यवहारिक ज्ञान और समस्या समाधान जैसे जीवन के महत्वपूर्ण कौशल का उचित विकास हो सके।



Mr. Ramdhan Vanzara  
Educator

## ડમી સ્કૂલિંગના છુપાયેલા જોખમો: વિદ્યાર્થીઓના ભવિષ્ય માટે એક જોખમ..

ડમી સ્કૂલિંગ, જ્યાં વિદ્યાર્થીઓ ફક્ત નામ માટે શાળામાં દાખલ થાય છે પરંતુ સંપૂર્ણ ધ્યાન કોચિંગ સંસ્થાઓ પર કેન્દ્રિત કરે છે, તે ભારતમાં સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાની તૈયારી માટે એક વધતું વલણ છે. જો કે આ સફળતાનો ટૂંકો રસ્તો લાગતો હોવાથી તે વિદ્યાર્થીઓના સર્વાંગી વિકાસને ગંભીર રીતે નુકસાન પહોંચાડે છે.

### ડમી સ્કૂલિંગના કારણે જોવા મળતી ઉણપો/ ખામીઓ:

#### 1. વિકાસમાં બાંધછોડ...

શાળાઓમાં સંદેશાવ્યવહાર, ટીમવર્ક અને નેતૃત્વ જેવા જીવનકૌશલ્યનું પોષણ થાય છે. ડમી વિદ્યાર્થીઓ આ મહત્વપૂર્ણ અનુભવ ગુમાવે છે.

#### 2. સીમિત અનુભવ અને સામાજિક વિકાસમાં અવરોધ...

શાળાના મિત્રો સંબંધની ભાવના પ્રદાન કરે છે, જે ભાવનાત્મક સુખાકારી અને શૈક્ષણિક સફળતા માટે જરૂરી છે. તેના અભાવે, વિદ્યાર્થીઓ એકલતા, ચિંતાનો સામનો કરે છે અને આત્મવિશ્વાસની કમી અનુભવે છે.

#### 3. માનસિક આરોગ્યનું જોખમ...

પરીક્ષા કેન્દ્રિત અભિગમ કઠોર તણાવ, અપૂરતું સ્પર્ધાત્મક દબાણ, આત્મસંદેહ અને ભાવનાત્મક સુખાકારીના અભાવ તરફ દોરી જાય છે. છેલ્લા કેટલાક વર્ષોમાં, ખાસ કરીને ડમી સ્કૂલ હબ જેવી કે કોટા, કે જ્યાં વિદ્યાર્થીઓમાં આત્મહત્યા ની સંખ્યામાં નોંધપાત્ર વધારો થયો છે.

#### 4. પ્રમાણપત્ર અને નૈતિક મુદ્દા...

ડમી શાળાઓની કોઈ અધિકૃત માન્યતા હોતી નથી, જે ભવિષ્યની તકોને અસર કરી શકે છે. તમામ શિક્ષણ બોર્ડ આ પ્રથાને નૈતિક કારણોસર અવગણે છે.

### વાલીઓએ ધ્યાનમાં રાખવા જેવી બાબતો

માતાપિતાએ ટૂંકા ગાળાની પરીક્ષાની સફળતાને બદલે સમગ્ર શિક્ષણને પ્રાથમિકતા આપવી જોઈએ. વિદ્યાર્થીઓએ કુદરતી શૈક્ષણિક વાતાવરણ અપનાવવું જોઈએ જે જિજ્ઞાસા, શિસ્ત અને વ્યક્તિગત વિકાસને પ્રોત્સાહન આપે.

શ્રી વશિષ્ઠ વિદ્યાલય (SVV) સાચી શિક્ષણ પદ્ધતિ શીખવા અને બાળકની સફળતામાં ઉત્તમ શાળાપ્રવેશની મહત્વતા સમજે છે. SVV એક સંતુલિત શિક્ષણ મોડલને પ્રોત્સાહન આપે છે, જેમાં શૈક્ષણિક શ્રેષ્ઠતા સાથે સહકાર્યક્રમિક પ્રવૃત્તિઓનો સમાવેશ થાય છે. અમારી JEE, NEET, CUET અને CA તૈયારી માટેની રચનાત્મક પ્રણાલીઓ વિદ્યાર્થીઓને ગુણવત્તાપૂર્ણ માર્ગદર્શન આપે છે જેથી તેમને ડમી સ્કૂલિંગની જરૂર ન રહે. અમારી બોર્ડ અને સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાની સફળતા એ સાબિત કરે છે કે માત્ર કુદરતી અને સર્વાંગી શિક્ષણ જ શૈક્ષણિક તેમજ કારકિર્દીની સફળતા માટે અનિવાર્ય છે.

સાચી સફળતા ફક્ત રટણ કે ગોખેલા ભણતરથી નહીં, પણ સર્વાંગી શિક્ષણ દ્વારા મળે છે. ડમી સ્કૂલિંગને ના કહો!



Mr. Vimal Sarang  
Educator